श्री पुरी धाम के गोवर्द्धन पीठ के 145वें पीठाधीश्वर : जगतगुरु शंकराचार्य परमपाद स्वामी निश्चलानंनजी सरस्वती महाराज

भगवान चंद्रमौलीश्वर के प्रत्यक्ष अवतारी हैं श्री पुरी धाम के गोवर्द्धन पीठ के 145वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य परमपाद स्वामी निश्चलानंनजी सरस्वती महाराज। वे लगातार 25 वर्षों से भी अधिक समय से वहां के पीठाधीश्वर तथा जगतगुरु पद को सुशोभित करते आ रहे हैं। वे कलियुग के दिव्य दण्डी स्वामी हैं। परम संन्यासी जगतगुरु हैं। भारतीय आध्यात्मिक चेतना के प्राण हैं। वे पिछले लगभग छह दशकों से अपने समस्त सांसारिक सुखों का त्यागकर भारतीय सनातनी शाश्वत परम्पराओं:: गंगा,रामसेतु ,गोमाता तथा अयोध्या रामजन्मभूमि के संरक्षक तथा दिव्य मार्गदर्शक हैं। वे जगन्नाथ संस्कृति के दिव्य संरक्षण अभियान में अपने आपको लगाये हुए हैं। उनके दिव्य संदेश विश्व मानवता के लिए एक दिव्य आलोक स्तंभ है जो आनेवाली अनेकानेक सदियों तक सनातनी लोगों की अन्तरतम को आलोकित करते रहेंगे। विश्व मानवता को वास्तविक शांति,मैत्री और एकता का दिव्य पथ–प्रदर्शन करते रहेंगे–

''एक सुसंस्कृत,सुशिक्षित,सुरक्षित,समृद्ध,सेवापरायण और स्वस्थ व्यक्ति तथा समाज की संरचना में विश्व की मेधा–रक्षा–वाणिज्य और श्रमशक्ति का उपयोग एवं विनियोग हो! विश्वको धर्मनियंत्रित, पक्षपातविहीन–शोषणविनिर्मुक्त–सर्वहितप्रद शासनतंत्र सुलभ कराने में सत्पुरुषों की प्रीति तथा प्रवृत्ति परिलक्षित हो!सेवा और सहानुभूति के नाम पर किसी वर्ग के अस्तित्व और आदर्श को विलुप्त करने के समस्त का षडयंत्र विश्वस्तर पर मानवोचित शील की सीमा में जघन्य अपराध उद्घोषित हो! विकास के नाम पर पर्यावरण को विकृत और विलुप्त करने के समस्त प्रकल्प निरस्त हों!स्थावर,जंगम प्राणियों के हितों में पाश्चात्य जगत विनियुक्त हो!पृथ्वी,पानी,प्रकाश,पवन और आकाश सर्व शांतिप्रद और सुखप्रद हों!''